11-06-97

स्वराज्य-अधिकारी बनो तो विश्व-अधिकारी और पूज्यनीय बन जायेंगे

आप सभी का स्नेह भरा यादप्यार और बाबा के प्रति सम्मुख आने का संकल्प लेते हुए मैं बाबा के पास जब पहुँची तो बाबा थोड़ा-सा दूर में थे और जैसे सूर्य जब अस्त होने पर होता है तो बादल गोल्ड-गोल्ड हो जाते हैं और गोल्ड बादलों के बीच में सूर्य बहुत सुन्दर लगता है। ऐसे ही बाबा का फेस बादलों के बीच में दिखाई दे रहा था और बाबा के मस्तक में जैसे शिवबाबा

बहुत चमक रहा था। तो यह सीन बहुत अच्छी लग रही थी। हम भी जैसे आगे बढ़ते बाबा को देखती गयी। तो बाबा ऐसे मुस्करा रहे थे जैसे कि बाबा के अन्दर कोई खास बात है और पता नहीं क्या कहने चाहते हैं। बाबा की ऐसी राज़युक्त मुस्कराहट थी। तो जब मैं बाबा के सम्मुख पहुंची तो जैसे कोई स्विच आन होता है और सामने कुछ प्रगट हो जाता है, ऐसे ही कोई स्विच दिखाई नहीं दिया लेकिन जैसे संकल्प के स्विच से अर्ध चन्द्रमा के रूप में तीन लाइनों में आप सभी मीटिंग वाले सम्मुख में इमर्ज हो गये और बाबा बादलों के बीच में जैसे चमक रहा था। तो मैं यह सीन देखती रही। उसमें पहली लाइन में लिखा था ''स्वराज्य सभा'' और उसके ऊपर दूसरी लाइन में लिखा था ''विश्व-राज्य सभा'' और जो उसके ऊपर लाइन थी उसमें लिखा था ''पूज्यनीय सभा।'' तो एक एक के यह तीन रूप इमर्ज थे। और जो पूज्यनीय रूप था, वह जैसे मन्दिर की मूर्तियां फूलों से सज़ी हुई होती हैं ऐसे एक-एक देवी के चारों ओर सफेद-सफेद फूलों का जैसे चार पांच लड़ियों का बार्डर था। यह सीन बड़ी अच्छी लग रही थी और बाबा जैसे साक्षी होकर देख रहा था, बता कुछ नहीं रहा था। तो मैंने मुस्कराते हुए कहा कि बाबा आपने कुछ बताया नहीं कि यह कहाँ से आई, कैसे आई?

फिर बाबा ने बताया कि अभी आवश्यकता है तुम लोगों को इन तीनों रूपों के स्मृति की। पहले चाहिए स्वराज्य-अधिकारी। अभी आप बच्चे जो भी पुरूषार्थ करते हो, इसका लक्ष्य और प्रैक्टिकल रूप है –''स्वराज्य-अधिकारी बनना।'' अगर स्वराज्य-अधिकारी बन गये तो यह विश्व-अधिकारी और पूज्यनीय रूप तो आपका साथ-साथ है ही। तो बच्चे स्वराज्य-अधिकारी कहाँ तक बने हैं, वह बाबा आपको दिखा रहे हैं। तो आप बच्चे जो सेल्फ रियलाइज़ेशन का सोच रहे हो, उसमें यह सोचो।

फिर बाबा ने कहा कि आप बच्चों को याद है, शुरू-शुरू में ब्रह्मा बाबा ने इसका कितना पुरुषार्थ किया था! ब्रह्मा बाबा की डायरी आप लोगों ने देखी थी, याद है? हमने कहा, हाँ बाबा, हमने देखी थी। बाबा ने उसमें शुरू का

पुरूषार्थ लिखा था। बाबा रोज़ रात में अपनी दरबार लगाते थे – जैसे आत्मा राजा बैठा है और सभा बुलाई है। मन मन्त्री, बुद्धि मन्त्री सभी सामने बैठे हैं और बाबा उनसे पूछते हैं बोलो – फलाना मंत्री, तुम्हारी सारे दिन की कारोबार कैसे चली? तो बाबा रोज स्वराज्य की दरबार लगाते थे और उसमें मन-बुद्धि और एक-एक कर्मेन्द्रिय को चेक करते थे। और मालिक होकर, राजा होकर पूछते थे कि कारोबार कैसे चली? तुमने यह क्यों किया? तुमको यह नहीं करना है, ऐसा करना है। तो बाबा ने कहा अभी जो आप सेल्फ रियलाइज़ेशन का सोचते हो उसमें ऐसे स्वराज्य की दरबार लगाओ। और मन-बुद्धि को अगर आपने ठीक किया, उसकी कारोबार ठीक चली तो सारी कारोबार ठीक चलेगी। लेकिन दरबार में सफलता के लिए चाहिए – कण्ट्रोलिंग पावर और रूलिंग पावर। जब तक कर्मेन्द्रियों पर वा मन पर कण्ट्रोलिंग पावर नहीं है तब तक न चाहते हुए भी छोटी-बड़ी गलतियां हो जाती हैं। तो रोज़ रात को अपनी कण्ट्रोंलिंग पावर, रूलिंग पावर को चेक करो और प्रैक्टिकल में इस पावर को यूज़ करो।

तो बाबा ने कहा कि आप सबने जो भी बातें निकाली हैं – लगाव होता या क्रोध होता या एकता नहीं होती है या सभी ने जो बाबा को पत्र लिखकर दिये हैं, उसमें मैजॉरिटी ने जो भी प्वाइंटस लिखी हैं कि हम यह करेंगे, यह नहीं करेंगे। एकता में रहेंगे .... आदि। तो बाबा ने कहा कि एक-एक प्वाइंट को क्या बैठकर देखेंगे? बस, कण्ट्रोलिंग पावर यूज़ करो तो यह सब बातें सहज हो जायेंगी। ऐसे बाबा से रूह-रूहान चल रही थी फिर सभा सामने से गायब हो गई।

फिर मैंने कहा कि बाबा आपने पत्र तो देखे, फिर उसकी रिज़ल्ट क्या हुई? जब मैंने यह पूछा–तो जैसे कोई खुशबू सेंट या अगरबत्ती की बहुत अच्छी मीठी आती है, ऐसे अचानक एक अलौकिक खुशबू सारे वतन में छा गई। बाबा ने कहा यह है रिज़ल्ट। तो मैंने कहा रिज़ल्ट माना आपके पास अच्छी खुशबू आई! तो कहा – हाँ बच्ची, खुशबू बहुत अच्छी है क्योंकि बाबा

ने एक विशेषता देखी कि हिम्मत सबने रखी है और जहाँ हिम्मत बच्चों ने रखी है वहाँ बापदादा की मदद और ब्राह्मणों की दुआयें, दो चीजें इन्हों को स्वत: प्राप्त होंगी। जो अन्दर संकल्प है कि हम ऐसा ब्राह्मणों का संगठन बनायेंगे तो जरूर ब्राह्मणों की भी दुआयें मिलेंगी और ब्राह्मण आत्माओं की दुआयें भी कोई कम नहीं हैं क्योंकि ब्राह्मणों की ही माला बननी है, ब्राह्मणों का राज्य होना है तो ब्राह्मणों की दुआयें सहज आपको आगे बढ़ाती रहेंगी। अब इस हिम्मत को कायम रखने के लिए सिर्फ रोज़ रात को यह सेल्फ रियलाइज करो और सारा दिन उसी प्रमाण चलो तो आपको सर्व की दुआयें और बाबा की जो मदद मिलेगी उससे बहुत सहज पुरुषार्थ होगा। पुरुषार्थ करना नहीं पड़ेगा लेकिन यह मदद और दुआयें बहुत सहज ऊँचा-ऊँचा उठाती रहेंगी।

फिर मैंने कहा कि सभी ने कहा है कि बाबा सम्मुख मिलने आये तो बहुत खुशी की बात है। तो जब मैंने यह कहा तो जैसे ब्रह्मा बाबा कभी-कभी सोच में पड़ जाता है और ऐसी शक्ल कर लेता, ऐसे करते कहा कि बस इतने में बाबा आ जाए... तो मैंने कहा कि बाबा हिम्मत की खुशबू तो आई फिर बाकी क्या चाहिए। कहा – नहीं बच्ची, मासी का घर नहीं है। जैसे ब्रह्मा बाबा कभी-कभी हंसी में कहता था - क्या समझा है–इतने में! ऐसे जैसे बाबा होमली रूप में बोल रहे थे। कहा – बस, अभी तो सिर्फ एक संकल्प का पेपर दिया है, अभी स्वरूप का पेपर जाकर देंगे। अभी तो आपके सामने प्रलोभन बहुत आयेंगे क्योंकि वायदा पक्का किया है तो माया भी पक्की होगी ना। तो प्रलोभन, बातें सब आयेंगी लेकिन जब बाबा देखेगा कि यह स्वरूप के पेपर में पास हो गये फिर बाबा ज़रूर सामने सम्मुख मिलन मनायेगा।

फिर मैंने कहा – बाबा, दोनों दादियों ने बहुत मेहनत की है और ऐसी मेहनत की है जो सबके दिल में एक संकल्प आ गया है – बस, हमको करना ही है। यह सबके मुख से निकलता है – 'बस बदलना है, करना है।'

तो बाबा ने कहा – यह तो मेरे मुरब्बी बच्चे हैं। इन्हों के ऊपर ही तो मेरा जिम्मेवारी का छत्र (ताज) पड़ा हुआ है। तो यह दोनों दादियां तो स्वराज्य ताजधारी हैं ही। इसलिए स्वराज्य ताज अधिकारी मेरे राज़े बच्चों को बहुत-बहुत मुबारक देना। ऐसे खास दादियों को और आप सभी को याद दी। अच्छा – ओमशान्ति।